जिलाऊं. यह अपने मन में ठान, रसोई खा, वहीं रहा. गरज़, जब रात हुई, तो कितनी एक देर के पीछे सब ने ख्यालू किया; और अपनी अपनी जगह जा लेटे; उधर इधर की आपस में बातें करते थे. यह ब्राह्मण भी एक तरफ़ जाकर पड़ा रहा. लेकिन पड़ा पड़ा जागता था.

जब उसने जाना कि बड़ी रात गई, और सब सो गये; तब चुपका उठ, आहिस्ते आहिस्ते उस के घर में पैठ, वह पोथी ले चल दिया. और कितने दिनों में, जिस मसान में कि उस ब्राह्मण की बेटी को जलाया था, वहां आन पहुंचा. उन दोनों ब्राह्मणों को भी वहीं पाया, कि आपस में बैठे हुए बातें करते हैं. उन दोनों ने भी उसे पहचान, उसके पास आ, मुलाक़ात की; और पूछा कि भाई! तुम देस बिदेस तो फिरे, पर यह कहो कि कोई बिद्या भी सीखी. वह बोला मैंने मृतसंजीवनी बिद्या सीखी है यह सुनतेही बोला, जो सीखे हो तो हमारी प्यारी को जिलाओ. उसने कहा कि राख हाड़ का ढेर करो तो मैं जिला दूं. उन्होंने राख हड्डियां इकट्ठी कर दीं. तब उसने पोथी में से एक मंत्र निकाल जपा. वह कन्या जी उठी. फिर उन तीनों को कामदेव ने यह अंधा किया कि आपस में झगड़ने लगे.

इतनी बात कह कर, बैताल बोला ऐ राजा! यह बता कि वह स्त्री किसकी हुई. राजा बिक्रम बोला कि जो मंढी बांधकर रहा था, वह नारी उसी की हुई. बैताल बोला जो वह हाड़ न रखता तो वह किस तरह से जीती. और दूसरा बिद्या न सीख आता तो वह क्योंकर उसे

जिलाता. राजा ने जवाब दिया कि जिसने उसकी हड्डियां रक्खी थीं वह तो उसके बेटे की जागह हुआ. और जिसने जीवदान दिया वह गोया उसका बाप हुआ. इससे वह जोरू उसी की हुई कि जो राख समेत झोंपड़ी बांध वहां रहा. यह जवाब सुन के, बैताल फिर उसी दरख़्त में जा लटका. राजा भी उसके पीछे पीछे जा पहुंचा. और उसे बांध कांधे पर रख फिर ले चला.

तीसरी कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! बर्दवान(१) नाम एक नगर है. उस में रूपसेन नाम एक राजा. एक रोज़ का इत्तिफ़ाक़ है, कि वह राजा अपनी डिऊढी के मुत्तसिल किसी मकान में बैठा था, कि दरवाज़े के बाहर से कुछ ऊपरी लोगों की आवाज़ आने लगी. राजा बोला कि दरवाज़े पर कौन है? और क्या शोर हो रहा है? इस में दरवान ने जवाब दिया महाराज! आपने यह भली बात पूछी; दौलतमंद की डिहुड़ी जान धन के लिये बहुतेरे आदमी आन बैठते हैं, और भांति भांति की बातें करते हैं. उन्ही लोगों का यह शोर है.

(१) वर्द्धमान.

यह सुन राजा चुप हो रहा. इतने में एक मुसाफ़िर, दक्षिण दिसा से, बीरबर नाम राजपूत चाकरी करने की आस किये, राजा की डिहुड़ी पर आया. दरवान ने उस का अहवाल मअ़लूम करके, राजा से कहा महाराज! एक शख़्स हथयारबंद चाकरी करने के आसरे पर आया है; सो दरवाज़े पर खड़ा है. महाराज की आज्ञा पावै तो वह रूबरू आवै. यह सुन राजा ने फ़रमाया कि ले आ. यह उसे जाकर ले आया. तब राजा ने पूछा ऐ राज पूत! तेरे तईं रोज़ ख़र्च को क्या कर दूं.

यह सुनके बीरबर बोला हज़ार तोले सोना मुझे रोज़ दो, तो मेरी गुज़रान हो. राजा ने पूछा तुम्हारे साथ लोग कितने हैं? उस ने कहा एक स्त्री, दूजा बेटा, तीजी बेटी, चौथा मैं; पांचवां हमारे साथ कोई नहीं. उस की यह बात सुन, राजा की सभा के लोग सब मुंह फेर फेर के हंसने लगे. पर राजा अपने जीमें सोच करने लगा कि बहुत धन इस ने किसवास्ते मांगा. फिर आपही अपने मन में समझा कि बहुत धन दिया हुआ किसी रोज़ सुफल होयगा. यह बिचार करके, राजा ने भंडारी को बुलाकर कहा हमारे ख़ज़ाने से हज़ार तोले सोना इस बीरबर के तईं रोज़ दिया करो.

यह परवानगी सुन, बीरबर ने, हज़ार तोले सोना उस दिन का ले, अपनी जगह ला, दो हिस्से कर, आधा तो बिराह्मणों को बांटा; और आधे के फिर दो बांटकर, एक बख़्र: उस में से अतीत, बैरागी, बैष्णव, सन्यासियों को

बांट दिया; और बाक़ी जो एक हिस्सा रहा, उस का खाना पकवा ग़रीबों को खिला दिया; बाक़ी जो कुछ रहा वह आप खाया. इसी तरह से हमेश: जोरू लड़कों समेत अपनी गुज़रान करता था. लेकिन, शाम के वक़्त रोज़ ढाल तलवार ले राजा के पलंग की चौकी में जा हाज़िर रहता; और राजा जब सोते से चौंककर पुकारता कि कोई हाज़िर है? तो यही जवाब देता कि बीरबर हाज़िर है, जो हुकम. इसी तरह राजा जब पुकारता तो यही जवाब देता, कि फिर इस में जो काम फ़रमाता, सो यही बजा लाता.

इसी तरह धन के लालच से रात भर सुचेत रहता. बल्कि, खाते, पीते, सोते, बैठते, चलते, फिरते आठ पहर अपने खाविंद की याद में रहता. रीत यह है, कि कोई किसू को बेचता है तो बिकता है; पर चकरिया चाकरी करके अपने तईं आप बेचता है. और जब बिका तो ताबिअ़दार हुआ. जो परबस हुआ तो इसे सुख कहां. मअ़ज़र है, कैसाही चतुर आक़िल पंडित होय, लेकिन जिस वक़्त अपने खाविंद के साम्हने होता है तो डरके मारे गूंगे के बराबर चुप ही रहता है. जब तलक तफ़ावत से है चैन से है. इसी वास्ते, पंडित लोग कहते हैं कि सेवाधर्म करना योगधर्म से भी कठिन है.

अलक़िस्स: एक रोज़ का ज़िक्र है, कि इत्तिफ़ाक़न रात के वक़्त मरघट से रंडी के रोने की आवाज़ आई. राजा सुन के पुकारा कोई हाज़िर है? बीरबर सुनतेही बोला

हाज़िर, जो ऊकम. फिर राजा ने यों ऊकम किया, जहां से औरत के रोने की आवाज़ आती है, वहां जाओ; और उस से रोने का सबब पूछकर, जल्द आओ. राजा, यह उसे फ़रमा, दिल में कहने लगा कि जिस किसी को चाकर अपना आज़माना हो तो वक़्त बे वक़्त उसे काम को कहे. अगर वह ऊकम उसका बजा लावे तो जानिये काम का है. और जो तकरार करे तो जानिये नाकारः. और इसी तरह से भाइयों को दोस्तों को बुरे वक़्त में परखिये; और स्त्री को नादारी में जांचिये.

ग़रज़, यह ऊकम पाकर उस के रोने की आवाज़ की धुन पर गया. और राजा भी, उस का साहस देखने के लिये, काले कपड़े पहनकर, पीछे पीछे बे मञ्लूम चला; कि इस में बीरबर जा पहुंचा. उस मरघट में, जहां रंडी रोती थी, देखता क्या है कि एक औरत, ख़ूबसूरत, सिर से पांव तलक गहने से लदी ऊई, डाढ़ें मार मार रो रही है. कभी नाचती, कभी कूदती, कभी दौड़ती है. आंखों में आंसू एक नहीं. लेकिन, सिर पीट पीट, हाय हाय कर, ज़मीन पर पटकनियां खाती है. उसका यह अह्वाल देख, बीरबर ने पूछा तू क्यों इस क़दर रोती पीटती है? तू कौन है? और तुझ पर क्या दुख है?

तब वह बोली कि मैं राजलक्षी हूं. बीरबर ने कहा तू किस कारन रोती है? फिर उसने अपनी अवस्था बीरबर से कहनी शुरूअ की; कि राजा के घर में शूद्रकर्म होता है; तिस से उसके घर में अलक्षी आवेगी. और मैं

उसके घर से जाऊंगी. बअ़्द एक महीने के, राजा निपट दुख पाके, मर जायगा. इस दुख से रोती हूं. और मैं ने उसके घर में बऊत सुख किया है, इसवास्ते यह पछतावा है. और यह बात किसी तरह से झूठ न होगा.

फिर बीरबर ने पूछा उस का कुछ ऐसा भी इलाज है कि जिस से राजा बचे, और सौ बरस जिये. वह बोली पूरब ओर एक जोजन पर देवी का मंदिर है. जो तू उस देवी को अपने बेटे का सिर, अपने हाथ से काट कर, दे तो राजा सौ बरस इसी तरह से राज करे, और किसी तरह का ख़लल राजा को न होय.

यह बात सुनतेही, बीरबर अपने घर को चला. और राजा भी उस के पीछे हो लिया. ग़रज़, जब वह घर में आया तो अपनी जोरू को जगा, उस ने सब अह्वाल ब्यर-हवार कहा. उन्ने यह अह्वाल सुन जगाया तो बेटे को. पर बेटी भी जागी. तब उस औरत ने लड़के से कहा कि बेटा! तुम्हारे सिर देने से राजा का जी बचता है, और राज भी क़ाइम रहता है. यह सुन वह बालक बोला, माता! एक तो, आप की आज्ञा; दूसरे, स्वामी का काज; तीसरे, यह देह देवता के काम आवे तो इससे अच्छी कोई बात दुनया में नहीं है मेरे नज़दीक. अब इस काम में देर करनी मुनासिब नहीं. मसल है, कि पुत्र होवे तो अपने बस का, और काया निरोग, विद्या से लाभ, मित्र चतुर, नारी ऊकम बरदार. जो ये पंच बातें आदमी को मुयस्सिर हों तो सुख की देनेवाली और दुख की दूर करने-

वाली हैं. अगर चाकर बेमरज़ी, और राजा बख़ील, दोस्त कपटी, और जोरू बेफ़रमान हो तो ये चार बातें आराम को दूर करनेवाली और दुख की देनेवाली हैं.

फिर बीरबर अपनी स्त्री से कहने लगा जो तू खुशी से अपने लड़के को दे, तो मैं ले जा, राजा के लिये, देवी के आगे बल दूं. वह बोली कि मुझे बेटा, बेटी, भाई, बंद, मा, बाप किसू से कुछ काम नहीं. मेरी गति तुम्हीं से है. और धर्मशास्त्र में भी योंहीं लिखता है, कि नारी न दान से सुध होती है, न बरत से. लंगड़ा, लूला, गूंगा, बहरा, अंधा, काना, कोढ़ी, कुबड़ा कैसाही उसका स्वामी हो, उस को उसीकी सेवा करने से धर्म है. अगर किसी तरह का दुनया में धर्म कर्म करे और खाविंद का हुक्म न माने तो दोज़ख़ में पड़े उस का बेटा बोला पिता! जिस आदमी से खाविंद का काम होवे जग में उसी का जीना सुफल है; और इस में दोनों जहान में भला है. फिर उस की लड़की बोली जो मा देवे बिष लड़की को, और बाप बेचे पूत को, और राजा ले सर्वस छीन, तो पनाह किसकी ले.

ऐसा कुछ वे चारों आपस में बिचार करके देवी के मंदिर को गये. राजा भी, छिपकर, उनके पीछे चला. जब बीरबर वहां पहुंचा तो मंदिर में जा, देवी की पूजाकर, हाथ जोड़ कहने लगा, हे देवी! मेरे पुचके बल देनेसे राजा की सौ बरस की उमर होवे. इतना कह, एक खांडा ऐसा मारा कि लड़के का सिर ज़मीन पर गिर पड़ा. भाई का मरना देख, उस लड़की ने अपने गले में एक खड्ग मारा

तो रूंड मुंड जुदे होकर गिर पड़े. बेटे बेटी को मुआ देख, बीरबर की स्त्री ने ऐसी तलवार अपनी गर्दन पर मारी कि धड़ से सिर जुदा हो गया. फिर उन तीनों का मरना देख, बीरबर अपने मन में चिंता कर कहने लगा कि जब लड़केही मर गये तो नौकरी किस के वास्ते करूंगा; और सोना, राजा से ले, किसे दूंगा. यह सोच कर, एक शमशेर ऐसी अपनी गरदन पर मारी कि तन से सिर जुदा हो गया.

फिर उन चारों का मरना देख, राजा ने अपने दिल में कहा कि मेरे वास्ते इसके कुटुंब की जान गई. अब ऐसे राज करने को लअनत है कि जिस राज के लिये एक का सर्वनास होवे और एक राज करे, ऐसा राज करना धर्म नहीं है. यह बिचार कर, राजा ने चाहा कि खांडा मार मरूं; इतने में देवीने आन हाथ पकड़ा; और कहा कि पुच! मैं तेरे साहस पर प्रसन्न हुई; जो तू मुझ से बर मांगे सो मैं दूं. राजा ने कहा माता! जो तू प्रसन्न हुई है तो इन चारों को जिला दे. देवीने कहा यही होवेगा. और यह कहते ही, भवानी ने पाताल से अमृत ला, चारों को जिला दिया. बअद उसके, राजाने आधा राज अपना बीरबर को बांट दिया.

इतनी बात कह, बैताल बोला धन्य है उस सेवक को कि जिसने स्वामी के लिये अपने जीव और कुटुंब का दरेग़ न किया. और धन्य है उस राजा को कि जिसने राज और अपने जीव का कुछ लालच न किया. ऐ राजा!

मैं तुमसे यह पूछता हूं, उन पांचों में किस का सत सरस हुआ. तब राजा बिक्रमाजीत बोला कि राजा का सत अधिक हुआ. बैताल बोला किस कारन. तब राजा ने जवाब दिया कि खाविंद के वास्ते जी देना चाकरको उचित है. क्योंकि उसका यही धर्म है. लेकिन, राजा ने जो चाकर के लिये राजपाट छोड़, जान को तिनके के बराबर न जाना, इस वास्ते से राजा का सत सिवाय हुआ. इतनी बात सुन बैताल फिर उसी श्मशान के दरख़त में जा लटका.

चौथी कहानी.

राजा वहां जा फिर बैताल को बांधकर ले चला. तब बैताल बोला कि ऐ राजा! भोगवती नाम एक नगरी है. वहां का राजा रूपसेन. और चूड़ामन(१) नाम एक तोता उसके पास है. एक दिन उस तोते से राजा ने पूछा तू क्या क्या जानता है. तब सूआ बोला कि महाराज! मैं सब कुछ जानता हूं. राजा ने कहा जो तू जानता है तो बतला कि मेरे बराबर सुन्दर नायका कहां है. तब उस तोते ने कहा महाराज! मगध देस में मगधेश्वर नाम राजा है. और उसकी बेटी का नाम चंद्रावती. तुम्हारी शादी उसके साथ होवेगी. वह अति सुंदरी है, और बड़ी पंडित.

(१) चूड़ामणि.

राजा ने, उस तोते से यह बात सुन, एक चंद्रकांत नाम योतिषी को बुलाकर पूछा कि हमारा ब्याह किस कन्या से होवेगा. उसने भी अपने नजूम के इलम से मअलूम करके कहा, चंद्रावती नाम एक कन्या है; उसके साथ तुम्हारी शादी होवेगी. यह बात राजा ने सुन, एक ब्राह्मण को बुलवा, सब कुछ समझा, राजा मगधेश्वर के पास भेजने के वक्त यह कहा अगर हमारे ब्याह की बात पक्की कर आओगे तो हम तुम्हें खुश करेंगे. यह बात सुन, ब्राह्मण रवसत हुआ.

और वहां मगधेश्वर राजा की बेटी के पास एक मैना थी; कि उसका नाम मदनमंजरी था. इसी तरह से, उस राजकन्या ने भी एक दिन मदनमञ्जरी से पूछा कि मेरे लायक शौहर कहां है? तब सारिका बोली भोगवती नगरी का राजा रूपसेन है; सो तेरा पति होगा. गरज, अनदेखे एकका एक फ़रेफ़्तः हुआ था; कि चंद रोज़ के अरसे में वह ब्राह्मण भी वहां जा पहुंचा, और उस राजा से अपने राजा का संदेसा कहा. उसने भी उसकी बात मानी; और अपना एक ब्राह्मण बुलवा, उसे टीका और सब रसूम की चीजें सौंप, उसी ब्राह्मण के साथ भेजा; और यह कह दिया कि तुम हमारी तरफ़ से जाकर बिनती कर राजा को तिलक देके जल्दी चले आओ. जब तुम आओगे तब हम शादी की तैयारी करेंगे.

अलक़िस्सः, ये दोनों ब्राह्मण वहां से चले. कितने दिनों में राजा रूपसेन के पास आन पहुंचे; और सब अह-